

DPN 6529

कार्तवीर्यार्जुन दीपदान पद्धति

Title: KĀRTTA VĪRYĀRJUNA DĪPA DĀNA PADDHATI

Run. No. 7254

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17 × 6.8

Folios 18
(15-32)

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 864

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

△ शते श्रीमच्छक्रवतार श्री कार्तवीर्यार्जुन दीपदान पद्धतिः समाप्तः॥ ॥

P.T.O.

सम्बत् ८६४ चैत्रशुद्धि द्वितीया सोमवार संपूर्णादिन ॥

पुस्तकमिदं वक्तुमिच्छामि ॥ सर्वज्ञराजोपाध्यायशर्मणाः ।।

४ मथादिन्मूर्द्धि मुखद्वयगुम्फयाद्वृत्तिन्यस्य ॥ ॐ अं कैः
 पृथिव्यकजा वायाकाशमनः अं द्रव्यायनमः ॥ ॐ वृं चं ग द स
 र्त्तु यत्र स गं धात्मनः वृं गि न स स्वाहा ॥ ॐ उं टं (घ्रा) त्वक् च द्र
 गि द्राष्टा हात्मनः उं गि स्वाये व षट् ॥ ॐ उं नं वाक्का वि या द याः
 यूय स्वात्मनः नं कं व चा य द् ॥ ॐ उं यं व च ना दान वि हा ना सः
 र्जन न्यात्मनः नतु या य को षट् ॥ ॐ अं यं प ना वृश्च हं का न वि
 हात्मनः अं अं य र्दृ ॥ ॐ अं औ यं नं वं गं वं सं हं स ४ सारं

ममला ॥ ॐ हं मम जीव ॥ ॐ हं मम
 सर्वं द्रिया वि ॥ ॐ हं मम वाक् न श्व क्र ॥ ॐ हं मम
 हं ॥ ॐ हं मम ग ल स र य स र व न स र चि रं नि ष लु ख ॥ ॥ मरु
 कं ह द य वा ह र्कं ध त्वा रि ॥ स क द्वा ज स्या या न न किं न नी प वि
 ला य मा र का न्या र्कं क र्या न् ॥ ॥ न न ॥ ॐ हं मम याम ॥ ॐ हं मम स्वः ॥ १३
 न न र्वि द न र्च न न्या म ना सा दू न य न् ॥ का दि न्य च व र्ज न र्स र्वि
 द न र्च न न्क ल य न् ॥ या दि क्क न्क ॥ स र्वि द्क के र्द कि ह ना स या न च
 य न् ॥ यून र्द कि ह ना सा या द्वा र्कं च यून ॥ ॐ हं मम र्का

मनुस्य ॥ व क्का अ वि ॥ ॐ हं मम य र्क न्क ॥ मार का स न ल ती य व
 ना ह र्क वी र्क स न र्क य ह ॥ ॐ हं मम कि ॥ न्या स वि नि या ग ॥ नि न्या म
 ख ह द य उ क्क या द्वा र्क म य्वा दी चि न्य स्य ॥ ॥ ॐ हं मम कं र्क मं दं र्क
 र्क य्वा र्क न म ॥ ॐ हं मम चं ग र्क नी र्क न म ॥ ॐ हं मम उं ग उं म य
 मा र्क न म ॥ ॐ हं मम नं ग र्क न्या मि का र्क न म ॥ ॐ हं मम नं र्क ॥ ॐ हं मम
 य ग र्क क नि ष का र्क न म ॥ ॐ हं मम यं ग र्क क न न ल य्वा र्क न म
 ॥ ॐ हं मम द य दि ष र्क र्क क्क य न् ॥ यं च न्क र्क र्क र्क वि हि

तवदनया ४ याद कृदि वक्षाद नीरास लय र्क कलिन गानि कः
 हीं ॐ न्द्र कन्या व दानी ॥ अक्षुर्क र्क र्चि नाति खिन व न के र्गी नी कर्ण
 यक्ष सखा मक्षा कल्या मलुक्क सुन जय न र्गी रा न र्गी नान मा मि
 ॥ ॥ क (८) षा उ न द ल य अ स न न्द्र वि द्रु य ल वा दि न भ ना चि न्य
 स, द द थ द द न द ल य अ का दि ॥ न्द्र यूर्व व न्द्र ॥ ना र्ही द न द लः १५
 य अ उ दि स नान् ॥ उ अ व द ल य अ वा दि स नान् ॥ या थो च ल
 द ल वा दि स नान् ॥ न्द्र म (८) दि द ल र्क मि नि न्य स्य ॥ ॥ अथ

वहिर्मा रु का ॥ ॐ न्द्र न म ४ ल ला ८ ॥ ॐ श्री न म ४ मू ख व ल ॥ ॐ ॐ न म
 ४ द क न ल ॥ ॐ ॐ न म ४ वा म भ ल ॥ ॐ उं उं न म ४ क र्क था ॥ ॐ मं मं
 न म ४ ना ति क था ॥ ॐ ॐ न म ४ क था ल था ॥ ॐ नं नं न म ४ उ अ ध नः
 था ॥ ॐ उं उं न म ४ उ अ ध द न य को ॥ ॐ न्द्र न म ४ नि व नि ॥ ॐ न्द्र
 ४ न म ४ मू ख ॥ ॥ द कि ल स य वा क्क र्क धि वृ क ल व र्णो ॥ य द द
 य र्क धि वृ ठ न व र्णो ॥ यं र्क द कि ल वा म वा र्क था ॥ वं यृ ४ ॥ र्क नो र्ही
 ॥ मं उ द य ॥ यं र्क म र्क ल न म ४ द द य ॥ नं न्द्र म र्क ल न न म ४

दक्षिणं ॥ हं मां सात्मन नमः ४ वामं ॥ वंभदात्मन नमः ४ ककुदि
॥ ॐ अस्मात्मानं नमः ४ हृदयादिदक्षिणं ॥ वंभदात्मन
नमः ४ हृदयादिवामं ॥ संशुक्रात्मन नमः ४ हृदयादिदः
क्षिणं ॥ हं यासात्मन नमः ४ हृदयादिवामं ॥ हं ११
ॐ वात्मन नमः ४ हृदयादिनार्यं ॥ कंयत्रमात्मन नमः ४ हृद
यादिस्वर्गं विन्यसन् ॥ ॥ नमः ४ याजमभिनर्त्तय ॥ अथ श्राव
निनिधाय ॥ नमः ४ लोकां दक्षिणं ४ सूर्यां गुहं वहिर्निःसृतां

[illegible]

कांछकासीषवान। नानाकल्यविरुषिन४कनसहसालुध्वान
 लार्ध, सहसवाकनेनिर्गलवन्तान४यउ४॥सकदीयेकना
 थंसविरुसमत्रुचि४सर्वद्रुषान्कान४पायादज्ञायनाकात्रथ
 वननिलय४सुलकाथानिलीम४। वायान्मषुलिनीकां कनधः १२
 नधनूषानिस्वनेसासयान४सथीमाकार्लवीर्यानिस्विलुनः
 यननार्थुवूज४क्रियकात्री॥ ॥ननामानसवृज्जकलागंस्व
 यनिष्ठाकथान्॥ लाःयचतुनसंनदन४वर्लनदनमिका

लहिलिखिताम्वसनमध्वकार्लवीर्यसंयूक्तदयायनम४००
 लाःनय॥निनससाहामेजन॥निखायेवषट्वायुथ॥कव
 चायकं व्रीमान॥मनुजयायवोषट्॥त्रे॥त्रेसायरुट्प
 न्वदिद्रवा॥मूलनामुलवाधनयकात्यमूलनासाय॥ ॥ॐ
 यंक्षुसार्थिनम४॥ॐनंतुष्यायेनम४॥ॐलंकालिनेनम४
 ॥ॐवंकालिने२४॥ॐगंविसूलिनिने२४॥ॐषंस्रिथे२४
 ॥ॐसंस्रयाये२४॥ॐहंकविलायेनम४॥ॐलंरुवावालये

२४॥ ॐ कं कवा वा हाये २४॥ ॐ मं वद्वि मलु हाय दश कलात्मनशी का
 लं वीर्यार्कं नार्घ्यं वाग्राध नायनम ४॥ **निसंयुक्त** ॥ **अमु** लं लं र्वं
 यका ल्यम ल नासाय ॥ कं हं तपि न्य २४॥ खं वं नापि न्य २४॥ गं यं
 धूसाये २४॥ घं रं मनीये २४॥ दं नं क्राहि न्य २४॥ चं धं नूयय २४॥ २०
 ॥ कूं दं सुषुसाये २४॥ जं धं लागदाये २४॥ मं नं विग्याये २४॥ जूं मं
 वाधि न्य २४॥ टं टं क्षान्ति ल्ये २४॥ ॐ कं माये २४॥ ॥ नत ४॥ **अं** **अं** कं
 मलु हाय दश कलात्मनशी कार्क वीर्यार्कं नार्घ्यं वाग्राय नः

मं निसंयुक्तमलु हाय दश कलात्मनशी कार्क वीर्यार्कं नार्घ्यं वाग्राय नः
 नायनम ४॥ **निसंयुक्त** ॥ **अमु** लं लं र्वं
 ॥ **अं** **अं** मताये नम ४॥ **अं** **अं** नन्दाये २४॥ **अं** **अं** पूषाये २४॥ **अं** **अं** उष्टी
 २४॥ **अं** **अं** सुमित्रेये २४॥ **अं** **अं** नद्ये २४॥ **अं** **अं** ध्रुवे २४॥ **अं** **अं** गमिन्ने २४॥ **अं** **अं** वाधिका
 ये २४॥ **अं** **अं** काये २४॥ **अं** **अं** कान्ताये २४॥ **अं** **अं** गिन्ने २४॥ **अं** **अं** धीये २४॥ **अं** **अं** नै
 गदाये २४॥ **अं** **अं** दध्मि २४॥ **अं** **अं** ४ दध्म मताये २४॥ **अं** **अं** साममधुला
 यथा उग कलात्मनशी कार्क वीर्यार्कं मताये नम निसंयुक्त

श्री कृष्णमूदयातीर्थमाकृष्यविमर्यं ॥ १ ॥ नृश्वानंमूलेनाह
 मण्डितायवीजनदीर्घषट्स्वनयूकनषट्मनिविन्यस्यग
 धादिनात्यर्थधनमूदयामृतीकृत्यकवचनावगुधमस्यमू
 दयाकाशमूतमस्त्वानंजयित्वाशुधसंनद्धधनमस्त्वचकगन् २१
 उसंकलीकनधमूदा४ वदद्युतजुसकिचिन्कृष्टयद्विद्यकृष्टसं
 दूकदवमात्मानंमूजादयानिचसंज्ञाकृतद्रुनत४याप्रव
 तुष्टयतजुसंदत्ताषट्काधमंयथाधधनिष्ठापूर्वकंमूलेन

षाठ्मायवापेयंयसंयूकदीर्घसंकलयन् ॥ ॥ तयथा ॥ ॐ नृस्य
 श्रीकारुवीर्यदीपदानमालामलस्यदंलानयमपि४ नृनृयः
 कृन्ध४ श्रीकारुवीर्यार्कभादवतांवीर्यंकीनकि४ कीकीलके
 कारुवीर्यार्कनयैत्यर्थदीपदानविनियोगः ॥ ॥ तत४ द्विती
 यवीजनदीर्घषट्स्वनयूकनषट्मं कृत्यादगंकाशासंकीर्ण
 ममायूकमेकनासिद्धीर्थं श्रीकारुवीर्यार्कनायसंयुददंनृस्य
 लामलुपयेन् ॥ ॐ नृंकीवषट्स्वनंवीर्यंकीकारुवीर्यार्कनाय

[illegible][illegible]

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

४ नल यी भय २४॥ यी ० पादयू. आग्नेयादि॥ धर्मय २४ स्नानाय २४
 ४ वेना स्नानय २४ लेखय २४ यूपय २४॥ अधर्माय २४ स्नानाय २४
 अधर्माय २४ अधर्माय २४ मध्य॥ अनन्ताय नमः ४॥ आनन्द
 स्नानाय २४ स्नाननालाय २४ सर्वतत्त्वमययन्त्राय २४॥ यन्त्राय २४
 यन्त्राय २४॥ विकान्तमयकालाय २४ यन्त्राय २४ मयिक
 र्त्तिकार्थे २४ अं अर्कमलुलाय २४ उं साममलुलाय २४ मं वक्रिः
 मलुलाय २४ सं सत्याय २४ यवाधत्मन २४ नं प्रकृत्युधिया

त्मन २४ नंतमसमाहात्मन २४ पूर्वदि॥ अं आत्मन २४ अं अन्
 नात्मन २४॥ यं यन्मात्मन २४ क्री स्नानात्मन २४॥ मध्य. मार्य
 गत्याय २४ कलानत्याय २४ विद्यागत्याय २४ यन्त्रायाय २४॥
 यागदिदल्लय॥ विमलार्थे २४ उत्कषिष्ये २४ स्नानार्थे २४ कि
 र्थाय २४ यागार्थे २४ यज्ञे २४ सत्याय २४ अं गान्ध्याय २४॥ मध्य॥ अ
 न्नयलार्थे २४ उं नभारुगवनविष्णुसर्वरूपात्मन वासुधवा
 य सर्वस्मै स्या गथा गयद्मयी भत्मन नमः ४॥ नित्यं नित्यं ३

वाञ्छी ॥ मुख आचमनीयं ॥ मधुपर्कं दत्त्वा पादूकामूडाया स्नान
 यी ० मानीयञ्चर्यं ॥ गंधर्हं नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै का लिखक ६
 आचमनं दिव्यं ॥ आचमनं उलूनीया वती भास्त्रीषकं चूका
 नि निवद्य पादूकामूडया आसनमानीय कृत्वा नैवय २१
 ककल्लरुष लक्ष्म्यवलय कटिल्लुगी गुलीया नि निवद्य
 कंगवकस्तु नीकर्षे न मिश्रयत्त न निवद्य पादया हृदय
 उपस्थां कर्त्तुं दत्त्वा गिरसि अक्षय्यां कर्त्तुं दत्त्वा वनमाः

ली निवद्यत ॥ नन ४ अग्नीमान निर्मति वायव्य दक्षिण
 न ४ लिखा कवेयानि संप्रदत्तं सर्वं तासं संप्रदत्त ॥ दया अत्रादि
 दू ४ थायं सूर्यान्मिन्न लक्षणं ॥ रुक्मा समर्थयत्त हं यथर्म
 वन लक्षणं ॥ पूं निपूण्यां कर्त्तुं समर्थयत्त ॥ पूं निपूण्यां वद
 नली ॥ द्वितीया वन लक्षणं ॥ द्वितीया वन लक्षणं निपूण्यां दूरु ४
 कार्य ४ ॥ नन ४ आचमनं दिव्यं कर्त्तुं नायनम ४ दूरु ॥ मानी मद वि
 र्त्तुं नायन ४ दक्षिण ॥ अदि मद विर्त्तुं नायन ४ यश्चि म ॥

देहमद विहंजनाय २४ उल्लस ॥ इक्ष्वा नागनाय २४ ॥ श्रम
 य ॥ इक्ष्वा नागनाय २४ नेमय ॥ इति नागनाय २४ कायः
 य ॥ श्रमय नागनाय २४ ॥ वृत्तिमान ॥ संयुक्तयुक्त्वन् युष्मा
 जलि ॥ वृत्तिद्वितीयावतर्ल ॥ ततः ४ युक्त्वादि ॥ कर्मकर्म २४ २८
 वक्ष्य कर्म २४ ॥ कर्म ४ ॥ कर्म २४ ॥ श्रमकर्म २४ ॥ युष्मा कर्म
 २४ ॥ विद्याकर्म २४ ॥ धनकर्म २४ ॥ वृत्ति ॥ एनादि कर्म लुथाय का
 नक मा ल्या ३ का वृत्ता ४ ॥ यक्ष नद वना नृपा यथ यथ वन

लिना ४ ॥ शक्रय ४ यक्ष रुमा ४ नीलदीव प्रसूय रा ४ सु ३ कुः
 मा ल्य वसना ललिना लि लक्ष्मी ४ ॥ वृत्ति आ लो संयुक्त युक्त्वा क
 मल्ल नयुष्मा जलि ४ ॥ वृत्ति द्वितीयावतर्ल ॥ ततः ४ युक्त्वादि ॥ ॐ
 हं वृत्त्या यस्मा धियनय सां गमय निसर्ग ॥ ॐ वृत्ति नयनता
 धियनय २४ ॥ ॐ यं जना यथा धियनय २४ ॥ ॐ कौ निर्मल य
 न्दिसा धियनय २४ ॥ ॐ वं वृत्त्या यथा धियनय २४ ॥ ॐ यं वा
 यथा यथा धियनय २४ ॥ ॐ सां सामा यनद्वया धियनय २४ ॥

ॐ हं ॐ नाराय विद्याधियतय २४॥ ॐ अं वक्र कल साकाधियतय २४॥ ॐ
 जी नून नाराय नागाधियतय २४॥ ॐ नि सं यू अ यू व व लू धीं ज लिं
 द या न ॥ ॐ नि चतु र्ध व न लं ॥ यू न ४ यू व दि ॥ ॐ व का य २४॥ ॐ
 न का ये २४ ॐ द क्षा य २४ ॐ ख का य २४ ॐ पा ना य २४ ॐ अं कृ णा ३
 य २४ ॐ ग जा य २४ ॐ मू ला य २४ ॐ य मा य २४ ॐ च का य २४॥ ६ २२
 य ल वा दि स वी जा नि, आ यू वा नि सं यू अ यू व व लू धीं ज लिं द
 ला ॥ ॐ नि यं च मा व न लं ॥ आ ग्न या दि वि दि कू ॥ ॐ व सु र्थां २

४॥ ॐ वृ द्ध ला २४॥ ॐ आ दि ह्ये ला २४॥ ॐ सर्व रु त ला २४॥ ॐ नि
 सं यू अ, अं ग द व ना ४ य वा न द व ना यां ली ना वि चिं स धू य र्क
 न सं यू अ मू रं ग म य र्णी वा क्ता ॥ व न स्य नि म हा स्य नौ, गं ध ३
 आ गं ध उ रु म ४ आ ध्र य ४ सर्व द वा नी, धू पा र्यं य नि गृ क्ता
 ॥ ॐ नि धू र्यं नि व य यू धीं ज लिं द ला दी य पा र्जं सं यू अ, वा म
 म ध म या ह्य द्वा ॥ स्र य का ण म रु दी य ४ सर्व न मि नि ना य
 रु ४ स वा क्ता र्जं न र्ज आ नि, दी पा र्यं य नि गृ क्ता ॥ ॐ नि दी

यं निवययूषीं जलिंदला ॥ षडसमनीं धातुपात्रे नियति ॥
 हवल् वरुप्रसातिकला . तद्वयनि पात्र निधाय . लुहसी दः
 लाम्बलननीं र्वायूनाया ॥ धनमूदयामृती कल चक्र मूद
 या मूदमलना वरु ॥ धनमूलन सफ धातु रिमं या . वामी गु ३०
 धन पात्रं स ॥ न मूदना य सुत्र लमसी नि जल किं द्या ॥ नि
 वयं गु क नां य वे ति मलन ने वयं . गुं या लय सारु नि . य
 समुद्रा ४ युद ४ धनमूलन यूषीं जलिंदला . मूद ४ य र्धिं दला

यथा भक्ति मूलमलं जाय ॥ उक्ता नि युक्त (ग) गलं . गल लाम्ब .
 लु नं जयं . सिद्धि र्वरु मधव . लु ल सा दाम्ब लु य ३ ॥ धन
 धवल् लु निवय ॥ लो किक मन्त्रि या ॥ धनमूलन नव दवना
 मावाक गंधयूषी ४ संधयूषी यं च द गंधा दं गंधा र्थि ति वा
 यु नाका ४ ने वयान्ना र्थी र्थी ॥ गुं यी ४ धवल् गल य ४ लाला ॥
 मूद दवना लु ४ लाला ति र्थी . तना मूलन यूषीं कर्ति र्थी
 लाम्ब मूलना विधानन सी लु न नाच मनी र्थी दला ॥ धनमूलन

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

लुप्याय यत्राय यत्रमठिन। श्रीविष्णुसनाहकय. विष्णुना
 यननम॥ ॐ निसजलमनं यानं नभकि स्त्रा ३३ यमन कः
 भादहन नती दलाय नकुव यामन दकि लामला नीना नानिस
 मय्यथय ॥ यूर्यां जलिं यं यनमस्त्रा नी कला. यदकि लामचरु
 यंकला. यूर्यां जलिं दला ॥ कुरे सुला यार्थयत् ॥ नन ४ यथ
 गकि मूलमलं जला नरु काय वशयथ संख्यं. कवच यार्थ क
 ला. य वाय यूर्यां जयं यनिवदयत् ॥ एव याव द्वाय समापि नू
 नरु नाओ च विसर्जन नरु ती यूर्यां कुर्यात् ॥ न करे मा सानं

लुप्याय वाय यत्रमठिन। श्रीविष्णुसनाहकय. विष्णुना
 यननम॥ ॐ निसजलमनं यानं नभकि स्त्रा ३३ यमन कः
 भादहन नती दलाय नकुव यामन दकि लामला नीना नानिस
 मय्यथय ॥ यूर्यां जलिं यं यनमस्त्रा नी कला. यदकि लामचरु
 यंकला. यूर्यां जलिं दला ॥ कुरे सुला यार्थयत् ॥ नन ४ यथ
 गकि मूलमलं जला नरु काय वशयथ संख्यं. कवच यार्थ क
 ला. य वाय यूर्यां जयं यनिवदयत् ॥ एव याव द्वाय समापि नू
 नरु नाओ च विसर्जन नरु ती यूर्यां कुर्यात् ॥ न करे मा सानं

यथासु निरुपेत्वा कर्मसु शौचमार्ग्यं कृत्वा सुदृष्ट्वा तु जीत
 नि ॥ ॥ ॥ निशम्य क्रावता वधी कारुवीर्याश्नदीयदान
 यद्वति ४ समाक ४ ॥ ॥ ॥ यादृशं पूर्यकं दृष्ट्वा तादृशं लिखि
 तं मया । यदि शुद्धमशुद्धम्वा ममदाशानदीयत ॥ ॥ ॥ ३२
 समन् ८७४ येन शुद्धि, द्वितीया, सामवाच, संस्कृतिदिन ॥
 पुस्तकमिदं वकुनि हस्य ॥ सर्वज्ञराजोपाध्याशर्मणः ॥

१८७ चार्तवीर्यार्जुन दीपदानपद्धति